छत्तीसगढ़ राज्य में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में रोजगार एवं भविष्य: नगरीय प्रशासन के संदर्भ में

कुन्दनझा
सहायक प्राध्यापक
(संविदा) पुस्तकालय
एवं सूचना विज्ञान
अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शालिनी शुक्ला
पुस्तकालयाध्यक्ष
पं. सुंदरलाल शर्मा
मुक्त विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

पुस्तकाय सूचना प्राप्ति का प्रमुख एवं अनिवार्य स्थान है वर्तमान समय में सूचना समाज का प्रमुख एवं अनिवार्य अंग बन गया है। प्रस्तुत शोध पत्र पुस्तकालय के महत्व, छ.ग. राज्य के विशय में सामान्य जानकारी, छ.ग. राज्य में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञाान की शिक्षा, पुस्तकालयध्यक्षों की नियुक्ति हेतु विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम)द्वारा शासकीय प्रयास एवं इनकी यथास्थिति, तथा नियुक्ति व पुस्तकालयध्यक्षों के विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : **Please Add Some Keywords**

प्रस्तावना

परिचय

वर्तमान समय सूचना के युग में प्रस्तुत हो रहा है जिसमें अधिकाधिक कार्य सूचना प्राप्ति, सूचना के उपयोग एवं उसके संग्रहण से है। मनुश्य का अधिकाधिक समय सूचना के उत्पादन एवं उसके उपयोग हेतु प्रयुक्त हो रहा है, वर्तमान में मनुष्य अपने जीवन का एक संपूर्ण हिस्सा शिक्षा के रूप में सूचना प्राप्ति एवं उपयोग हेतु व्यतीत करता है। सूचना मुख्यतः प्रलेख एवं अप्रलेख के रूप में उपयोग हेतु संग्रहित की जाती है जिसका प्रयोग आवश्यकता के अनुसार वर्तमान एवं भविष्य में प्रयोग किया जा सके।

उपरोक्त सूचना को वर्तमान एवं भविष्य में प्रयोग हेतु प्रलेख एवं अप्रलेख के रूप में पुस्तकालय में संग्रहित किया जाता है जिससे प्रलेख का संग्रहण, उनका अधिकाधिक प्रयोग एवं भविश्य में उपयोग हेतु संरक्षण किया जा सके पुस्तकालय एक समाजिक एवं प्रमुख सूचना संस्थान है।

शोध का उददे्श्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उददे्श्य हैः–

1. पुस्तकालय व्यवसाय के विशय में जानकारी प्रदान कराना,
2. छत्तीसगढ़ राज्य के विशय में जानकारी प्रदान कराना,
3. छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान सें सम्बंधित शिक्षण संस्थान के विशय में जानकारी प्रदान कराना,
4. छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के पद हेतु विभिन्न शासकीय न्यूक्ति हेतुविज्ञापन की जानकारी प्रदान कराना,
5. छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के पद हेतु विभिन्न शासकीय न्यूक्ति हेतु विज्ञापन की वर्तमान यथा स्थिति के विशय में जानकारी प्रदान कराना,
6. छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के शासकीय न्यूक्ति हेतु एवं पुस्तकालयध्यक्षो के विकास हेतु सुझाव प्रदान करना।

शोध समंक संग्रहण की प्रविधि

प्रस्तुत शोध में आंकड़ो को एकत्रित करने में निम्न विधियो का उपयोग किया गया है :–

1. छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के नियुक्ति हेतु प्रकाशित विज्ञापन के माध्यम से,
2. इंटरनेट पर उपलब्ध समंक के विश्लेशण के द्वारा।

शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के चयनितनगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) को सम्मिलित किया गया है।

पुस्तकालय व्यवसाय

पुस्तकालयों का स्वर्गतुल्य स्थान, ज्ञान का मंदिर, विश्वविद्यालय का हृदय, गॉव रूपी अंगूठी में जड़ा नगीना आदि कई विशेषणों से विभूशित किया जाता रहा है। अतः पुस्तकालयध्यक्षता का व्यवसाय एक महान व्यवसाय ह। कोई व्यवसाय कितना उत्तम है, इसका पता इस बात से पता चलता है कि उस व्यवसाय के मुवक्किल कौन हैं। इस दृष्टि से पुस्तकालयाध्यक्षता का व्यवसाय निश्चित रूप में एक उत्तम व्यवसाय है क्योकि पुस्तकालय में अधिक आने वाले व्यक्ति सभ्य तथा ज्ञान के पिपासु होते है।

पुस्तकालयध्यक्ष न केवल समाज के उत्तम नागरिकों के संपर्क में आता है बल्कि नागरिकों को सही समय पर सही सूचना देकर एक असीम आनंद और उत्साह का अनुभव भी करता है। पुस्तकालय व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें कुछ देकर या सेवा कर आनंद का अनुभव किया जाता है, कुछ लेकर नहीं। कविता या साहित्य की रचना में भी कवि या साहित्यकार एवं अपूर्व आनंद का अनुभव करता है। कविता या साहित्य रचना के निम्नलिखित उद्देश्य संस्कृत काव्यशास्त्री मम्मट ने गिनाए हैं–

"काव्यं यशसेर्थकृते, व्यवहारविदे, शिवेतरक्षतये।
सघः परिनिर्वृतये कांतासम्मिततयोपदेशयुजे"
सं वां को., पृ. 207

अर्थात साहित्य की रचना छः उद्देश्यों के लिए की जाती है– 1. यश के लिए, 2. धन के लिए, 3. लोक व्हार के लिए, 4. स्माज कल्यान के लिए, 5. विरेचनानंद के लिए तथा 6. मृदु संम्प्रशण के लिए।

डां रंगनाथन के पुस्तकालयध्यक्षता के लिए निम्नलिखित

उद्देश्य बतायें है–

1. व्यक्तिगत लाभ या स्वार्थ,
2. समाज कल्याण,
3. सर्जनात्मक या विरेचनात्मक आनंद,
4. देशीय धर्म।

छत्तीसगढ़ राज्य : एक परिचय

छत्तीसगढ़ क्षेत्रफल की दृश्टि से भारत का दशवां बडा राज्य है इसका कुक्षेफल 135,190 वर्ग कि.मी. है। एवं जनसंख्या की दृष्टि सें यह भारत का 16वां बड़ा राज्य है इसकी कुल जनसंख्या 02,08,00,000 है। यहां की भाषा छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी है। यह मध्यप्रदेष राज्य से 1 नवम्बर 2000 को पृथक होकर नया राज्य के रूप निर्मित हुआ । यहां भारत में विधुत एवं स्टील उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, छत्तीसगढ़ राज्य कुल भारत के छः राज्य से लगा हुआ है ये राज्य मध्यप्रदेश, महाराश्ट्र, आंध्रप्रदेश, उडीसा, झारखंड एवं उत्तरप्रदेश राज्य है।

छत्तीसगढ़ राज्य में ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान की शिक्षा

छत्तीसगढ़ राज्य में निम्न लिखित विश्वविद्यालय के द्वारा पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विशय में शिक्षा प्रदान की जा रही है, ये विश्वविद्यालय निम्नानुसार है–

क्र	विश्विद्यालय का नाम	स्थान	स्नातक एवं स्नाकोत्तर पाठ्यक्रम	बी. लिब	एम. लिब	एम. फिल	पी.एच.डी.
1	गुरू घासीदास विश्वविद्यालय	बिलासपुर	✓	✓	✓	–	✓
2	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय	रायपुर	–	✓	✓	✓	✓
3	डां. सी.वी.रमन विश्वविद्यालय	बिलासपुर	–	✓	✓	✓	✓
4	मैट्स विश्वविद्यालय	रायपुर	–	✓	✓	✓	✓
5	कलिंगा विश्वविद्यालय	रायपुर	–	✓	✓	✓	✓
6	पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय	बिलासपुर	–	✓	–	–	–

पुस्तकालयाध्यक्षों के न्यूक्ति हेतु शासकीय प्रयासएवं यथास्थिति

छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में समय–समय पर ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के पद हेतु विभिन्न शासकीय न्यूक्ति हेतु विज्ञापन प्रकाशित किया है जिनकी सूचना निम्नानुसार है–

क्रमांक	नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) का नाम	कुल विज्ञापित पद				
		सामान्य	अ.जा.	अ.ज.जा.	ओ.बी.सी.	कुल पद
1	नगर पंचायत कोटा (करगीरोड)	**01**	**01**	**00**	**00**	**02**
2	नगर पंचायत भटगांव	**01**	**00**	**00**	**00**	**01**

3	नगर पंचायत डभरा	**00**	**00**	**00**	**01**	**01**
4	नगर पंचायत कटघोरा	**01**	**01**	**00**	**00**	**02**
5	नगर पंचायत तखतपुर	**01**	**01**	**00**	**00**	**02**
6	नगर पंचायत शिवरीनारायण	**01**	**00**	**00**	**00**	**01**
7	नगर पंचायत विश्रामपुर	**01**	**00**	**00**	**00**	**01**
8	नगर पंचायत जैजैपुर	**00**	**01**	**01**	**00**	**02**
9	नगर पालिक निगम, रायपुर	**00**	**01**	**00**	**00**	**01**
10	नगर पालिक निगम, कोरबा	**00**	**01**	**00**	**00**	**01**
कुल पद		**06**	**06**	**01**	**01**	**14**

सुझाव

छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के शासकीय न्यूक्ति एवं पुस्तकालय एवं पुस्तकालयध्यक्षो के विकास हेतु सुझाव निम्नानुसार है–

1. शासन द्वारा शिक्षा के विकास हेतु पुस्तकालय के योगदान एवं महत्व को समझते हुए पुस्तकालय के विकाश हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।
2. षासन द्वारा निर्धारित न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता में पुस्तकालय विज्ञान में स्नातक तथा स्नाकोत्तर उपाधि प्राप्त अभ्यार्थी को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
3. राज्य शासन द्वारा पुस्तकालयध्यक्षो की नियुक्ति हेतु राज्य स्तर का परीक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें उर्तिण अभ्यार्थी को ही नियुक्ति प्रदान किया जाना चाहिए।
4. पुस्तकालय एंव पुस्तकालयध्यक्षो के विकाश हेतु राज्य शासन को पुस्तकालय समिति का निमार्ण करना चाहिए पुस्तकालय के विकास हेतु नवीन आवश्यक योजनाओं का निर्माण करना चाहिए।
5. शासन द्वारा शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए समय–समय पर पुस्तकालयध्यक्षो की नियुक्ति हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।
6. शासन द्वारा संचालित स्कूलो के पाठ्यक्रम में पुस्तकालय में अध्ययन हेतु समय तथा माध्यमिक कक्षा में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान का अध्ययापन का कार्य किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी पुस्तकालय के महत्व तथा पुस्तकालय उपयोग की विधियों का समझ सकें।

उपसंहार

वर्तमान समय में पुस्तकालय शिक्षण संस्थान का अभिन्न अंग है पुस्तकालय के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति अपने विशय की नवीन एवं अधिकाधिक सूचना प्राप्त कर सकता है। सूचना प्रौधौगिकी के वर्तमान युग में पुस्तकालय के उपयोगिता में वृद्धि हुई है जिसमें डिजिटल पुस्तकालय एवं डाटा केन्द्र के रूप में पुस्तकालय के शिक्षण सामाग्री का प्रयोग अधिकाधिक रूप से पूर्ण हुआ है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में शिक्षा प्रदान करने हेतु विभिन्न विश्वविद्यालय तथा नगरीय प्रशासन (नगर पंचायत/नगर पालिक/नगर निगम) में ग्रंथपाल (नगरीय निकाय) के शासकीय न्यूक्ति हेतु प्रयाय तथा सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ स्त्रोत

1. महेन्द्रनाथ (1998), पुस्तकालय और समाज, जयपुर पोइन्टर पब्लिशर्स।
2. शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998), पुस्तकालय एवं समाज, नई दिल्ली : ग्रन्थ अकादमी।
3. सैनी, ओमप्रकाश (1999), ग्रंथालय एवं समाज, आगरा : वाई. के. पब्लिशर्स।
4. झा, कुन्दन (2012), छत्तीसगढ़ सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम : एक अध्ययन, बिलासपुर : शा. जमुना प्रसाद वर्मा स्नातो. महाविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़।
5. झा, कुन्दन (2014), पुस्तकालयः सूचना संप्रेशण का माध्यम, शा. नार्गाजुन विज्ञान महाविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़।